मातृभाषा का महत्व एवं उद्देश्य

1. मातृभाषा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है।
बचपन के आरम्भिक दिनों में विचार-विनिमय का मुख्य साधन मातृभाषा ही होती है। व्यक्ति अपने जीवन आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों को अपने परिवार तथा समाज के अन्य लोगों से मातृभाषा के माध्यम से ही सीखता है।

2. मातृभाषा का उद्देश्य विचार-विनिमय की कुशलता विकसित करना है। विद्यालयी शिक्षा से पूर्व बालकों में मातृभाषा के माध्यम से परिवार, समाज के सदस्यों द्वारा विचार-विनिमय की योग्यता विकसित हो चुकी होती है। विद्यालय में सिर्फ मातृभाषा के व्याकरण-सम्मत मानक उच्चारण अभिव्यक्ति का अभ्यास कराया जाता है।

3. ~~ज्ञानवर्द्धन करना~~

4. सृजनात्मकता का विकास करना

5. सौंदर्यानुभूति का विकास करना - अनपढ़ व्यक्ति में भी मातृभाषा के माध्यम से सौन्दर्यबोध तथा रसानुभूति की थोड़ी बहुत क्षमता होती है, किन्तु मातृभाषा की औपचारिक शिक्षा उस बोध की क्षमता में गुणात्मक वृद्धि करती है।

6. सृजनात्मकता का विकास करना

7. जीविकोपार्जन की क्षमता का विकास करना।

8. सांस्कृतिक चेतना का विकास करना - मातृभाषा की औपचारिक शिक्षा व्यक्ति में सांस्कृतिक चेतना का विकास करती है।

Scanned with CamScanner

द्वितीय भाषा का उद्देश्य

1. विचार-विनिमय क्षेत्र का विस्तार करना - भाषा या द्वितीय भाषा का उद्देश्य है शिक्षार्थी में अन्य भाषा-भाषी लोगों के साथ स्व-विचारों का सम्प्रेषण कर उनके विचारों से अवगत होने की क्षमता विकसित करना।

2. ज्ञान-भण्डार वृद्धि में सहायक →

अन्य भाषा शिक्षण से उस भाषा में उपलब्ध ज्ञान-राशि के अर्जन से ज्ञान-भण्डार में वृद्धि होती है। अपनी विचारधाराओं को नवीनता प्रदान करने में शिक्षार्थी को सहायता मिलती है।

3. अन्य संस्कृति से परिचय में सहायक →

अन्य भाषा के ज्ञान से शिक्षार्थी उस भाषा-भाषी समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप परिचित होते हैं। उस भाषा-भाषी समाज की सांस्कृतिक मान्यताओं, जीवन-मूल्यों, विचारधाराओं

4. व्यावसायिक कुशलता में सहायक

5. समायोजन में सहायक

6. सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता के विकास में सहायक

7. भाषा एवं साहित्य-तुलना ज्ञान का विकास

8. व्यवसायिक क्षेत्र में विकास।

Scanned with CamScanner